Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 6, December-2022, ISSN 2230-7540

21वीं सदी में भारतीय वस्त्र के फैशन का विकास

मधु शर्मा[1]*, डॉ कृष्णा सिन्हा[2]

[1] रिसर्च स्कॉलर, यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, जयपुर

[2] रिसर्च सुपरवाइजर, यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, जयपुर

सार - वेशभूषा और वस्त्रों ने प्राचीन काल से, भौगोलिक क्षेत्रों और जलवायु परिस्थितियों में, दुनिया में एक प्रमुख स्थान पर कब्जा कर लिया है। लोगों को स्वाभाविक रूप से जो भी सामग्री आसानी से उपलब्ध थी उसका उपयोग किया। समय के साथ, वस्त्रों और परिधानों की डिजाइनिंग कारीगरों के हाथों में विकसित हुई क्योंकि उन्होंने कपड़े और परिधानों को समृद्ध किया। तकनीकों का विभाजन, हालांकि, स्पष्ट नहीं था और अक्सर एक तकनीक दूसरे में प्रवाहित हो सकती है , जिससे विशिष्ट रूपों और शैलियों में भिन्नता हो सकती है। अच्छे शिल्प कौशल के लिए एक गाइड प्रदान करने के लिए सर्वोत्तम वस्त्रों और परिधानों का संरक्षण, पुनरुद्धार और अध्ययन आवश्यक है। यह आशा की जाती है कि उभरती हुई प्रौद्योगिकी के प्रभाव से सजावटी डिजाइनिंग के क्षेत्र में पुनर्जागरण होगा। फैशन की दुनिया की सेवा करने और हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए आज भारतीय वस्त्र और पोशाक डिजाइनों का नवीन रूप से उपयोग किया जा सकता है।

कीवर्ड - भारतीय, वस्त्र, फैशन, विकास, सांस्कृतिक विरासत, प्रभाव

----------X----------

परिचय

कपड़े मनुष्य के लिए स्वाभाविक हैं और उसके बिना कपड़ों के शरीर पर उनकी उचित सजावट बदसूरत नहीं है , इसके विपरीत यह सुंदर और मनभावन है, शायद हमें ईडन गार्डन में सर्प को दोष देना चाहिए , जो हव्वा को जगाने और उसे उसके बारे में जागरूक करने के लिए जिम्मेदार था (सेनगुप्ता, 2019)। तन वेशभूषा और वस्त्रों का विकास उस दिन से शुरू हुआ जिस दिन हव्वा ने रणनीतिक रूप से खुद को पहले अंजीर के पत्ते से ढक लिया था! लेकिन उसके कपड़ों में स्थायी गुणवत्ता नहीं थी और वह शायद उन्हें उतनी ही बार बदलती थी जितनी बार उसका मूड। हम प्राचीन चित्रों और मूर्तियों से देख सकते हैं कि भारतीय महिलाएँ अपने यूरोपीय समकक्षों की तरह ही फैशन के प्रति जागरूक थीं। इतिहास साक्षी है कि मनुष्य उनकी पूर्ति के लिए आविष्कार और सृजन करता रहा है। इसलिए प्रकृति के प्रति उनका आवश्यक प्रेम प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से ऐसी सभी रचनाओं में प्रकट हुआ है। उसकी जरूरतें , उसका सामाजिक-भौगोलिक परिवेश, उसकी आर्थिक स्थिति , सभी का उसमें पूर्ण रूप से प्रतिनिधित्व होता है। इनमें विशेष रूप से, उनकी वेशभूषा सामाजिक जीवन , ऋतुओं और उनके कार्य क्षेत्र का अत्यधिक प्रभाव दिखाती है। यह "वेशभूषा ही है जो समाज में उसकी व्यक्तिगत पहचान स्थापित करती है और जो उसे सामाजिक पदानुक्रम से भी जोड़ती है (बाबेल, 2012)।

प्राचीन काल से भारत में वस्त्रों का उत्पादन होता रहा है। हालाँकि, पुराने वस्त्रों में से बहुत कम मौजूद हैं। एक कारण यह है कि कपड़ा बहुत लंबा है एक कला के रूप के बजाय केवल उपभोग के एक लेख के रूप में माना जाता है, और डिजाइन हर रोज टूट-फूट के माध्यम से खो जाते हैं। अब का भारतीय गांव लगभग चार हजार साल पहले के अपने पूर्ववर्ती के लिए बहुत कम समानता रखता है (बच्चू, 2004)। फिर भी शुरुआती शैलियों का बड़ा हिस्सा कशीदाकारी, चित्रित, रंगे और मुद्रित वस्त्र जैसे परिधानों को शब्द के मूल अर्थ में वास्तविक पारंपरिक कला के रूप में वर्णित किया जा सकता है। जैसे-जैसे समय बीतता गया, वैसे-वैसे अधिकांश गाँवों का सांस्कृतिक अलगाव उनके बढ़ने के अनुपात में कम होता गया आस-पास के शहरों के साथ संपर्क , और परिणामस्वरूप महान मंदिर

www.ignited.in

परिसरों और शाही अदालतों की संस्कृति के साथ जो भारतीय उच्च कला के तत्कालीन प्रचलित चरण का प्रतिनिधित्व करते थे (बाजवा, 2012)। व्यावहारिक रूप से गाँव का कोई पहलू नहीं सांस्कृतिक आदान-प्रदान और पारस्परिक प्रभाव होने के कारण प्राचीन संस्कृति या जनजातीय जीवन अछूता रहा (बर्मन, 2017)।

खादी के कपड़ों में फैशन

आज की आधुनिक दुनिया में एक पुरुष या महिला को आमतौर पर पहली नजर में उसके पहनावे से आंका जाता है; और हमें उसकी सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति के बारे में एक राय बनाने की आदत है कि वह किस प्रकार की पोशाक पहनती है। कपड़े लोगों या कुल स्थिति के बारे में हमारी धारणा को सरल बनाते हैं। लेकिन- खादी, हथकरघे पर बुना हुआ कपड़ा, वर्ग से अलग है। खादी को पहले एक ऐसा कपड़ा माना जाता था जिसे अमीर लोग स्वीकार नहीं करते थे लेकिन गरीब इसे नहीं खरीद सकते थे। अत्यधिक उन्नत समाज में "खादी" के स्थान को जानना महत्वपूर्ण है जिसमें ग्लोबल वार्मिंग सबसे तेजी से आने वाला खतरा है। यह वास्तव में एक मूलभूत मुद्दा है और यह एक ऐसा बिंदु उठाता है जहां हमें जीवन और उसकी शैली के प्रति अपना मूल दृष्टिकोण तय करना होगा। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उच्च प्रौद्योगिकी के माध्यम से केंद्रीकृत उत्पादन प्रणाली सस्ती है, और खादी के मामले में चरखा और हथकरघा जैसे श्रम गहन सरल मशीनों पर आधारित विकेन्द्रीकृत की तुलना में पावर लूम उत्पादित कपड़े सस्ते हैं (बोरा, 2015)। लेकिन यहां हम एक बहुत ही कठिन तथ्य को पहचानने में विफल हैं: कम मजदूरी पर बड़े उद्योगों में अमानवीय परिस्थितियों में कार्यरत एक श्रमिक की दुर्दशा और मिल से बने सिंथेटिक कपड़ों के नुकसान। इसलिए हमें यह तय करना होगा कि हम किस तरह का जीवन जीना चाहते हैं और किस तरह की जीवनशैली अपनाना चाहते हैं।

21 वीं सदी के कपड़ों का युग

21वीं सदी पूरी दुनिया में तेजी से विकास का युग रही है। पिछली शताब्दी ने दो विनाशकारी विश्व युद्ध देखे हैं , उपनिवेशित राष्ट्रों की मुक्ति , मानवाधिकारों और नस्लीय समानता का उदय , संप्रभु अर्थव्यवस्थाओं का तेजी से विकास, पूरे विश्व में औद्योगीकरण , शीत युद्ध , प्रमुख वैज्ञानिक सफलताएँ, पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में जागरूकता और सिकुड़न यात्रा और संचार में प्रगति के कारण दूरियां। लैंगिक अधिकारों की स्वीकृति सहित मानवाधिकारों की बढ़ती अनिवार्यता के साथ संयुक्त तकनीकी प्रगति के संयोजन के परिणामस्वरूप व्यक्तित्व , स्वतंत्र निर्णय लेने , व्यक्तिगत विचारधारा और जीवन शैली में वृद्धि हुई है।

फैशन, मानव स्थिति की अभिव्यक्ति के रूप में भी विविधतापूर्ण है। 1947 में स्वतंत्रता के बाद और इस सहस्राब्दी में जारी रहने के बाद, मूल्य प्रणालियों और जीवन शैली में बदलाव के कारण भारतीय फैशन में नए रूप सामने आए हैं। पूरे उपमहाद्वीप में फैशन शैलियों के प्रसार में प्रतीक एक बड़ी भूमिका निभाने के लिए उभरे हैं। समकालीन भारतीय समाज में शहरी महिलाओं के लिए उच्च स्तर की मुक्ति भारत और दुनिया में महिलाओं के बीच नई सांस्कृतिक संवेदनाओं और नई फैशन प्रथाओं की कुंजी रही है। पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं के कारण फैशन अधिक व्यापक हो गया है जहां बड़ी मात्रा में निर्माण लागत में काफी कमी लाता है (चेतिया, 2016)।

20वीं शताब्दी के प्रथमार्द्ध में भारतीय वस्त्र- भारतीय राजघराने, विदेशी प्रभाव, खादी

दुनिया के अन्य हिस्सों की तरह , दक्षिण एशिया कई सांस्कृतिक तत्वों के विलय के लिए एक क्रूसिबल रहा है। समय के साथ-साथ प्रत्येक नया प्रभाव मौजूदा संस्कृति के साथ मिश्रित हो गया है। हालाँकि , यह पूर्व में स्थापित स्वदेशी तत्वों के उन्मूलन के बिना समामेलन , विनियोग और विविधीकरण की सीमा है , जो प्रत्येक संस्कृति में विशिष्टता लाता है। प्राचीन इतिहास के दौरान भारतीय और ग्रीक शैलियों का मिश्रण आज भी भारतीय कला और मूर्तिकला में देखा जा सकता है। मध्ययुगीन काल के दौरान भारतीय और मध्य पूर्वी शैलियों के बीच संघ के तत्व एक पहचाने जाने योग्य दृश्य सौंदर्य बन गए जिसे अब भारतीय माना जाता है। इसी तरह का परिणाम तब हुआ जब भारत पुर्तगालियों के नियंत्रण में था और फिर ब्रिटिश स्वामित्व वाली ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन औपनिवेशिक शासन था। भारतीय वस्त्रों और उत्पादों की परिष्कृत विलासिता को अंग्रेजों ने सराहा ; जबकि भारतीय जनता के बीच पश्चिमी डिजाइनों और कपड़ों के प्रति आकर्षण प्रबल था। 19वीं शताब्दी के मध्य तक, भारतीय दरबारी पोशाक यूरोपीय वस्त्रों और यूरोपीय डिजाइन तत्वों के साथ बनाई गई थी। 19वीं शताब्दी के दौरान, पारंपरिक रूप से दस्तकारी वाली भारतीय वस्तुओं को यूरोप में निर्मित और भारत द्वारा आयातित औद्योगिक रूप से उत्पादित वस्तुओं से प्रतिस्पर्धा की चुनौती का सामना

करना पड़ा। यह समस्या अंग्रेजों द्वारा लगाए गए विभिन्न क्षेत्रों के स्वदेशी वस्त्रों पर लगाए गए करों से जटिल हो गई थी, जिसने स्वदेशी हाथ से बुने हुए और दस्तकारी वस्त्रों के उत्पादन और व्यापार को गंभीर रूप से नुकसान पहुंचाया था। एक उदाहरण कश्मीर शॉल का मामला था , जिसे दो कारणों से गिरावट का सामना करना पड़ा - शिल्प की यूरोपीय नकल, और कश्मीर के अफगान शासकों और बाद में सिख शासकों द्वारा लगाया गया दमनकारी डैग शॉल टैक्स। एशिया और मध्य पूर्व के बाजारों में यूरोप के मुद्रित और मिल-निर्मित वस्त्रों का प्रवाह भारत के स्वदेशी कपड़ा उद्योग के लिए एक और झटका था। अधिकांश एशिया और मध्य पूर्व भारत से वस्त्रों के भारी आयातक थे , विशेष रूप से मुद्रित और हाथ से पेंट किए गए वस्त्र। इन हस्तनिर्मित वस्त्रों को जल्द ही औद्योगिक रूप से निर्मित कपड़ों की चुनौती का सामना करना पड़ा (चेतिया, 2006)।

भारतीय कपड़ों पर विदेशी प्रभाव

शुरुआत में पश्चिमी पहनावा अभिजात वर्ग और अदालतों तक ही सीमित था। धीरे-धीरे 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में पश्चिमी शिक्षा प्राप्त लोगों ने भी पश्चिमी शैली के कपड़े पहनना शुरू कर दिया। ब्रिटिश अधिकारियों के साथ काम करने वाले भारतीय बाबू की पत्नियों के रूप में , अपने पतियों के साथ आधिकारिक समारोहों में जाती थीं। उन्होंने बैंड कॉलर के साथ साड़ी ब्लाउज और ब्रिटिश मेमसाहिबों द्वारा पहने जाने वाले पश्चिमी ब्लाउज की तरह लंबी , पफ स्लीव्स और हेम पर टक और लेस के साथ पश्चिमी पूर्ण लंबाई वाली स्कर्ट जैसी साड़ी पेटीकोट को अपनाया। साड़ी के किनारों को लेस से ट्रिम किया जा सकता है (कैर, 2016)।

20वीं शताब्दी में पारसी समुदाय फारस से गुजरात और पश्चिमी भारत के अन्य हिस्सों में बसने के लिए चला गया। चीन के साथ समुद्री व्यापार ने पारसी पुरुषों को अपने परिवार की महिलाओं के लिए चीन से कशीदाकारी वाले कपड़े वापस लाने का एक तरीका प्रदान किया। ये महिलाओं के लिए पेकिंग सिलाई , साटन सिलाई और विभिन्न प्रकार की गाँठ सिलाई जैसे टांके का उपयोग करके बिना रेशम के धागे में शिफॉन , धुंध या साटन साड़ियों (जिसे गारा कहा जाता है) के किनारों के साथ जटिल पैटर्न की कढ़ाई करने की प्रेरणा बनीं। कभी-कभी फ्लैट चांदी के तार को बादला कहा जाता है , और जरी या मोतियों नामक धातु के धागे का भी इस्तेमाल किया जाता था। कढ़ाई को लोकप्रिय रूप से पारसी कड़ाही कहा जाता था। अपनी विशिष्ट कढ़ाई के साथ साड़ी का विकास , जिसे पारसी गारो के रूप में जाना जाता है , इसलिए, चीन से रेशम के कपड़े और तकनीक को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है , लेकिन चीनी, यूरोपीय और के संयोजन के साथ विशिष्ट रूप से स्वदेशी है।

भारत के शाही परिवारों में फैशन

19वीं शताब्दी के अंत और 20वीं शताब्दी की शुरुआत में , यूरोपीय वस्त्रों का आयात काफी बढ़ गया था। इसके साथ ही, भारत के कुछ हिस्सों में घटते संरक्षण और अकाल के कारण कारीगर क्षेत्र में गिरावट आई। इस समय पारंपरिक और पश्चिमी दोनों शैलियों में अभिजात वर्ग के कपड़े पहने जाते थे। अदालत में और औपचारिक अवसरों के लिए , सदी के अंत में एडवर्डियन शैली से प्रेरित पश्चिमी विवरण के साथ भारतीय पोशाक , और बाद में 1920 और 1930 के दशक के स्पोर्टी लुक से , दिखाई दे रहा था। इस नए भारतीय कुलीन वर्ग ने यूरोप के नवीनतम फैशन के साथ तालमेल बिठाने का प्रयास किया। हालांकि , कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने मूल भारतीय सौंदर्यशास्त्र को बनाए रखा। 1911 में दिल्ली दरबार एक ऐतिहासिक अवसर था। इस अवसर के दौरान , भारतीय राजघरानों ने सावधानीपूर्वक तैयार किए गए भारतीय कपड़ों के माध्यम से धन और सरताज के शोधन का प्रदर्शन किया। अदालत में भारतीय पोशाक के लिए वरीयता का एक साथ होना था , साथ ही रोब-जैसे फैशन और सहायक उपकरण में यूरोपीय प्रभाव दिखाई देता था। मेन्सवियर में जो एक बड़ा बदलाव हुआ , वह पहले के लोकप्रिय चोगा और जामा से अब लोकप्रिय शेरवानी, अचकन और चापकन में संक्रमण था , जो हमेशा कुर्ता-पायजामा और पगड़ी के साथ जोड़े जाते थे। 20वीं सदी की शुरुआत का यह लुक अब सेरेमोनियल मेन्सवियर की पोशाक बन गया है। समय के साथ कुछ परिवर्तनों के बावजूद इसका मूल स्वरूप और स्वरूप स्थिर रहता है (चिश्ती, 2019)।

भारतीय सिनेमा और फैशन

1950 के दशक से, हिंदी सिनेमा कपड़ों, एक्सेसरीज़ और स्टाइलिंग की शैली का आधार बन गया। समाचार पत्र , पत्रिकाएँ और सिनेमा पोस्टर लोगों के लिए अपने सिने मूर्तियों की वेशभूषा देखने के प्रमुख स्रोत बन गए। सेलिब्रिटी स्टार से लेकर रैंप से स्टोर रैक तक फैशन ट्रेंड के प्रसार की दिशा और प्रक्रिया जनता के लिए फैशन पर सिनेमा के प्रभाव की ओर इशारा करती है (क्रेक, 2003)।

1950 के दशक का फैशन: हिंदी सिनेमा में 1950 के दशक की शैली ने खुले तौर पर हॉलीवुड सितारों और

www.ignited.in

कभी-कभी फैशन की राजधानियों में विशेष रूप से लंदन में स्ट्रीट फैशन को संदर्भित किया। शम्मी कपूर को 1950 के दशक के लंदन के टेडी बॉय उपसंस्कृति और बाद में लंदन के मॉड उपसंस्कृति के समान स्पोर्टी जैकेट और पतला पैर पतलून पहनने के लिए देखा गया था। पश्चिम से फैशन अपडेट के प्रसारण की व्याख्या भारतीय सौंदर्यशास्त्र के अनुरूप की गई। 1950 के दशक की हॉलीवुड की संकीर्ण कमर और पतली छाया से संकेत लेते हुए, हिंदी सिनेमा की अभिनेत्रियों जैसे वैजयंतीमाला और वहीदा रहमान ने भी साड़ी ब्लाउज, कुर्ता और इसी तरह के चोली पैटर्न वाले कपड़े पहने थे जो धड़ को पतला करते थे लेकिन एक ढीला सिल्हूट था (कुमार, 1999)।

1970दशक का फैशन: भारत में सिंथेटिक कपड़ों के उपयोग में वृद्धि दुनिया भर में इसी तरह की प्रवृत्ति का विस्तार था। यह इस तथ्य के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है कि ये कपड़े प्राकृतिक कपड़ों की तुलना में सस्ते और बनाए रखने में आसान थे। पश्चिमी हस्तियों की गतिविधियों का प्रभाव भारत में महसूस किया गया। बीटल्स ने ऋषिकेश में महर्षि महेश योगी के आश्रम का दौरा किया। विदेशी पर्यटकों, मशहूर हस्तियों और आध्यात्मिक खोज पर जाने वालों के लिए भारत एक पसंदीदा 'गो' गंतव्य था। शांति और संगीत के लिए वुडस्टॉक उत्सव और 1960 के दशक का हिप्पी फ्लावर चाइल्ड आंदोलन 1970 के दशक में चला, लेकिन अधिक आधुनिक, परिष्कृत रूप के साथ। टाई और डाई, बाटिक, निटवेअर, क्रोशिया, और मैक्रैम जैसे दस्तकारी तत्वों के साथ भारत-शैली के प्रिंट, बहने वाले हल्के धुंध के कपड़े का उपयोग करने वाले जातीय कपड़ों के लिए विश्व स्तर पर और भारत में आकर्षण था। रिप्ड बेल-बॉटम जींस, निट में कोऑर्डिनेटेड ट्विन सेट , ब्लॉक प्रिंट्स के साथ फ्लोइंग काफ्तान, डिस्को से प्रेरित चमकदार ल्यूरेक्स कपड़े भारत में लोकप्रिय थे। परिधान में नायलॉन और पॉलिएस्टर जैसे सिंथेटिक कपड़ों के उपयोग में वृद्धि के कारण उज्ज्वल, नियॉन रंगों में बोल्ड , साइकेडेलिक और रंग अवरुद्ध प्रिंट हुए।

1980 दशक का फैशन: भारत टेलीविजन पर एमटीवी की पहुंच इतनी शक्तिशाली थी कि यह एक ऐसी संस्कृति बन गई जिसने भारतीयों के फैशन के बारे में सोचने के तरीके में एक बड़ा बदलाव लाया। यह दो अलग-अलग दृश्य पहचानों के साथ एक साहसिक दशक था - एक जिसने कार्यस्थल के क्षेत्र में शक्ति को व्यक्त किया , और दूसरा शारीरिक फिटनेस और ग्लैमर के क्षेत्र में। यह पश्चिम में एक ऐतिहासिक दशक था क्योंकि महिलाओं ने कार्यस्थल पर पुरुषों के समान अधिकारों की मांग की थी , उनके ड्रेस कोड के माध्यम से उनकी क्षमता पर बल दिया, जिसे पावर ड्रेसिंग के रूप में जाना जाता है। पावर लुक ने अतिरंजित कंधे पैड (मर्दाना) के साथ संरचित सूट की कठोरता के बीच एकीकरण का संकेत दिया , संकीर्ण-बेल्ट कमर और बहने वाले पेप्लम (स्त्रीलिंग) के घटता के साथ।

1990 के दशक का फैशन: ग्रंज 90 के दशक के शुरुआती दौर के सबसे लोकप्रिय यूनिसेक्स रेडी-टू-वियर फैशन में से एक था। यह अक्सर शर्ट , स्टोनवाश्ड या रिप्ड जींस , निट हुडी, डॉक मार्टेंसबूट्स और स्नीकर्स पर व्हाइट-नेवी-प्लम कॉम्बिनेशन में मुख्य धारा में प्रवेश करता था। स्लाउच सॉक्स और व्हाइट स्नीकर्स , जैसा कि फिल्म 'कुछ कुछ होता है' (1998) में देखा गया है। डॉट-कॉम बूम ने पुरुषों के व्यापार को आकस्मिक रूप से लोकप्रिय बना दिया। इसमें फॉर्मल सूट के बजाय ड्रेस स्लैक्स , चिनोज़, खाकी, बेल्ट, लंबी आस्तीन वाली बटन-अप शर्ट , एक वैकल्पिक टाई और स्वेटर शामिल थे। औपचारिक अवसरों पर , मैचिंग शर्ट और चमकीले टाई के साथ तीन या चार बटन वाले सिंगल ब्रेस्टेड सूट के साथ अधिक औपचारिक लुक को प्राथमिकता दी जाती थी। ऑल-ब्लैक सूट , शर्ट और टाई भी पुरुषों के लिए एक लोकप्रिय फॉर्मल लुक था। अलीशा चिनॉय द्वारा निर्मित और बिद्दू द्वारा निर्मित इंडी-पॉप एल्बम 'मेड इन इंडिया ' 1995 में रिलीज़ हुई और हिंदी फिल्म संगीत एल्बमों की तुलना में बड़े पैमाने पर बेची गई। गहरे स्तर पर, इसने भारतीयता में रुचि को प्रेरित किया। लेगिंग के ऊपर ढीले कपड़े , केड्स या बैले फ्लैट्स के साथ कशीदाकारी जींस के साथ बेबीडॉल लुक में चिनियस की बच्चे जैसी छवि।

20 वीं सदी के अंत में फैशन

20वीं सदी के अंत और 21वीं सदी में भारत में फैशन उद्योग का व्यवसायीकरण देखा गया है। बाजार अपनी स्वयं की विशेषज्ञता के साथ विकसित हुए हैं , जिसमें पेशेवरों को शामिल होने और इसके विकास में योगदान करने की आवश्यकता है। बाजारों का विभाजन (खुदरा , निर्यात, डिजाइनर), परिधान खंडों का वर्गीकरण (कैजुअल वियर, रिसॉर्टवियर, स्ट्रीट वियर, डिजाइनर कपड़े आगे हाई-एंड कॉउचर और रेडी-टू-वियर आदि में विभाजित) , बिक्री के तरीके (ब्रिक-एंड) -मोर्टार - मॉल/बुटीक , ऑनलाइन आदि) , पेशे (डिजाइनर , सहायक डिजाइनर , पैटर्न निर्माता , कशीदाकारी, समन्वयक, प्रौद्योगिकीविद्,

विपणन पेशेवर, व्यापारी, स्टाइलिस्ट, फैशन सामग्री लेखक आदि) ने फैशन को पसंद का पेशा बना दिया है।

भारतीय फैशन डिजाइनर:

फैशन डिजाइनर उच्च स्तर के सौंदर्यशास्त्र और गुणवत्ता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालांकि उन्हें उद्योग के ग्लैमरस चेहरे का प्रतिनिधित्व करने के लिए देखा जाता है , इसमें बहुत मेहनत शामिल है। कई डिजाइनर हथकरघा और दस्तकारी वस्त्रों के साथ शिल्प क्षेत्र में काम करने में तेजी से शामिल हो रहे हैं। निम्नलिखित कुछ फैशन डिज़ाइन हैं जिन्होंने भारत में फैशन के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

रितु कुमार: रितु कुमार डिजाइन में भारत के अग्रदूतों में से एक हैं। उन्होंने 1967 में कलकत्ता (अब कोलकाता) के पास एक गाँव में एक कार्यशाला की स्थापना की। उनके शुरुआती कार्यों में हैंड ब्लॉक प्रिंट और स्क्रीन प्रिंट की साड़ियाँ और भारतीय पोशाकें शामिल थीं। ज़रदोज़ी कढ़ाई के साथ उनके सराहनीय पुनरुत्थानवादी काम के परिणामस्वरूप इस जटिल शिल्प की उच्च दृश्यता और माँग हुई। तब से वह 40 से अधिक वर्षों से शिल्प पुनरुद्धार के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने 1999 में 'कॉस्ट्यूम्स एंड टेक्सटाइल्स ऑफ रॉयल इंडिया' नामक एक पुस्तक भी लिखी है। भारत में 'रितु' ब्रांड नाम के तहत 'बुटीक' संस्कृति की शुरुआत करने वाली पहली महिला के रूप में , उनके पास 'लेबल' नामक परिधान की एक दूसरी पंक्ति भी है। , दोनों भारत के 14 शहरों में स्टोर बेचते हैं। वह 2013 में प्रतिष्ठित पद्म श्री पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली मुख्यधारा की भारतीय डिजाइनर हैं।

रोहित बल: श्रीनगर में जन्मे, रोहित बल ने 1986 में नई दिल्ली में अपने भाई राजीव बल के साथ अपने करियर की शुरुआत की और 1990 में अपना लेबल शुरू किया। कारीगर की सुंदरता और हस्तकला की कलात्मकता को उजागर करने वाली भारतीय भव्यता से प्रेरित होकर , वे मखमल जैसे समृद्ध कपड़े का उपयोग करते हैं, अपने विस्तृत डिजाइनों के लिए ब्रोकेड। भारतीय फैशन बिरादरी के एक दिग्गज , बाल को कई पुरस्कार मिले हैं। कई युवा डिजाइनरों ने उनके उत्साहजनक मार्गदर्शन में डिजाइन और गुणवत्ता में निपुणता के बारे में सीखा है। उन्हें मौज-मस्ती और विलासिता के बीच के संबंध को समझने वाले पहले भारतीय डिजाइनर के रूप में जाना जाता है।

अनीता डोंगरे: राजस्थान की पारंपरिक भव्यता और शिल्प परंपराओं से आकर्षित होकर , अनीता डोंगरे ने 1995 में अपनी कंपनी - हाउस ऑफ अनीता डोंगरे की शुरुआत की , जो भारत में सबसे सफल उद्यमों में से एक है। अब इसमें अन्य ब्रांडों का एक पोर्टफोलियो शामिल है , जिनमें से प्रत्येक की अपनी अलग पहचान है , अर्थात् और जो महिलाओं के लिए एक समकालीन पश्चिमी कपड़ों का ब्रांड है, ग्लोबल देसी जो एक युवा ग्राहक को लक्षित करने वाला बोहो-चिक लुक है , ग्रासरूट जो एक पर्यावरण के अनुकूल लक्ज़री प्रेट लेबल है यह सुस्त शिल्प और वस्त्रों को बनाए रखने और पुनर्जीवित करने की उनकी प्रतिबद्धता को संबोधित करता है, और अनीता डोंगरे जो मुख्य लेबल है जो दुल्हन के वस्त्र , महिलाओं और पुरुषों के लिए लक्ज़री प्रस्तुत करती है। इसके अलावा , पिंकसिटी दस्तकारी वाले कीमती गहनों पर ध्यान केंद्रित करती है। 2015 में सीएनएन 'ग्रोइंग इंडिया' श्रृंखला पर विशेष रुप से प्रदर्शित और कई प्रतिष्ठित व्यावसायिक पत्रिकाओं ने उन्हें 'व्यापार में 50 सबसे शक्तिशाली महिलाएं ' सूची में शामिल किया।

मनीष मल्होत्रा: मनीष मल्होत्रा ने 2010 में मुंबई में अपने पहले रनवे शो में पारंपरिक रंगों , शिल्प कौशल, बनावट और कढ़ाई का उपयोग करके ग्लैमरस पहनावे के साथ अपना लेबल लॉन्च किया। लेबल दुल्हन , वस्त्र, प्रसार और पुरुषों के वस्त्र संग्रह प्रदान करता है और वर्तमान में मुंबई और नई दिल्ली में दो स्टैन-अलोन स्टोरों पर और पूरे भारत में और विदेशों में बहु-ब्रांड बुटीक में खुदरा बिक्री करता है। फिल्मों और ऑफ-स्क्रीन में बॉलीवुड सिनेमा अभिनेताओं का मेकओवर उसे प्रशंसा अर्जित की है।

निष्कर्ष

महिलाओं को पारंपरिक रोल मॉडल द्वारा निर्देशित किया जाता है, उदाहरण के लिए मां साड़ी पहनेंगी और बेटी सलवार कमीज पहनेंगी। ड्रेस कोड का पालन न करने को पथभ्रष्ट के रूप में देखा जाता है , उदाहरण के लिए जींस पहने हुए बेटी को हाथ से निकल जाने और ध्यान आकर्षित करने की कोशिश के रूप में देखा जाता है। मध्यम वर्ग में फ़ैशन दमन सबसे कम प्रचलित है। ऐसा इसलिए है क्योंकि मध्यम वर्ग आधुनिक मूल्यों को अपनाने के पारंपरिक प्रयासों से अलग हो रहा है। आधुनिकता की ओर संक्रमण के प्रारंभिक दौर में अपनी सहजता और दृश्यता के कारण फैशन को अपनाना आधुनिकता का प्रतीक बन जाता है। 21वीं सदी के दौरान भारतीय फैशन का विकास। भारतीय फैशन ग्रीक , मध्य पूर्व और पश्चिमी फैशन की संस्कृति और परंपरा से

www.ignited.in

प्रभावित था। 21वीं सदी में कई प्रमुख फैशन डिजाइनरों और एफडीसी ने भारतीय फैशन के विकास में योगदान दिया।

संदर्भ

बाबेल, एस. और एन. रानी , 2012। कॉलेज की लड़कियों का वस्त्र खरीद निर्णय, कपड़ा रुझान, अप्रैल, 2012।

बच्चू, पी. 2004. डेंजरस डिज़ाइन्स: एशियन वीमेन फ़ैशन द डायस्पोरा इकोनॉमीज़। न्यूयॉर्क: रूटलेज।

बाजवा, आर.के. 2012। चंडीगढ़ की कॉलेज जाने वाली लड़कियों के कपड़ों में ब्रांड वरीयता। कपड़ा रुझान , नवंबर 2012।

बर्मन, आर. 2017. द असाम ट्रिब्यून , गुवाहाटी, 29 जनवरी, 2017 को पढ़ने के दौरान , द असम ट्रिब्यून , गुवाहाटी, द असाम ट्रिब्यून , 2017, जो चमकते हैं , दस्तकारी वाले असमिया आभूषण गहनों से कहीं अधिक हैं।

बोरा, के. 2015. क्या पोशाक वास्तव में मायने रखती है ? होराइजन में प्रकाशित, द असम ट्रिब्यून, गुवाहाटी, शुक्रवार- दिसंबर 4, 2015।

कैर, के.ई. 2016. प्राचीन भारतीय परिधान: प्राचीन भारत में लोग क्या पहनते थे?

चेतिया, एस. 2006. द असमिया हैंडलूम एंड टेक्सटाइल ट्रेडिशन। गृह विज्ञान विभाग, डिगबोई महिला महाविद्यालय, डिगबोई- 786171।

चेतिया, एस. 2016. असमिया वस्त्रों के डिजाइन और अनुप्रयोग में एर्गोनोमिक नवाचार। इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकी, प्रबंधन और अनुप्रयुक्त विज्ञान में उन्नति के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। वॉल्यूम 3, अंक 6, जून 2016।

चिश्ती, आर. (2019). भारतीय परंपरा और उससे परे की साड़ियाँ। पहला संस्करण। नई दिल्ली: रोली बुक्स (प्रा) लिमिटेड

क्रेक, जे. 2003. द फेस ऑफ फैशन: कल्चरल स्टडीज इन फैशन। रूटलेज, 11 न्यू फेटर लेन, लंदन।

कुमार, आर. (1999)। रॉयल इंडिया की वेशभूषा और वस्त्र। पहला संस्करण। लंदन: क्रिस्टीज बुक्स लि.

सेनगुप्ता, एच. (2019)। भारतीय फैशन। पहला संस्करण। दिल्ली: पियर्सन एजुकेशन (सिंगापुर)

Corresponding Author

मधु शर्मा*

रिसर्च स्कॉलर, यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, जयपुर